

नं. - २००२

नाम शरण मन्त्र राज

कृती x x x

पत्रसं ४ — स. x

विषय तन्त्रम्

प्रारभमंत्रराजः

५००२

5002

F. = 4

श्रीगणेशायनमः॥ गेधस्य श्रीशारभसालुवपत्तिराजदिवत्तारिंशदक्षरीमंत्रराजमहामंत्रस्यांका
लाग्निरुदरविः॥ जगतीकंदः॥ श्रीशारभशारभेश्वरोदेवताखेवीजे॥ स्वाहाशक्तिः॥ फट्कोलके
श्रीशारभशारभेश्वरप्रसादसिद्धियेजयेविनियोगः॥ ओं ह्रीं श्रीं गृष्टाभ्यां नमः॥ गेवेवेवेफट् तर्ज
नीभ्यां स्वाहा॥ प्राणप्रसासि प्रीणयदासि फट् मध्यमाभ्यं वसट्॥ सर्वशत्रुसंहारणाय अनामि
काभ्यां फट् शारभसालुवपत्तिराजाय कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् इं फट् स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां
फट्॥ एवं दद्यान्नित्यासः॥ अथ ध्याने॥ चेशकोवक्रिदृष्टीकुलिशवरनखचंचलासुप्रजिह्वा
कालीर्गोचयतौ सुदृजठरगोभैरवो वा उवाग्निः॥ ऊरुद्वौ मारिस्तृषकृविकटमुखश्च उ
वातातिवेगः॥ संहर्ता सर्वशत्रुजयति च शारभः सालुवपत्तिराजः॥ श्रीमानेशारभे ध्यात्वा श
रणापत्तिरूपतिः॥ अष्टोत्तरसहस्राणां शत्रूणां फलनाशनः॥ २॥ मानसैः संप्रज्ज्ञाशुशं प्रदर्शये
त्॥ त्रिशूलशुशये नमः॥ कपालशुशये नमः॥ खड्गशुशये नमः॥ शंखशुशये नमः॥ चक्रशुशये
नमः॥ अथ मन्त्रः॥ ओं ह्रीं खेवेवेवे फट् प्राणप्रसासि प्राणप्रसासि फट् सर्वशत्रुसंहारणाय शारभ

मालवायपति विराजायऊ फट् स्वाहा ॥ मयादिना जप समर्पः ॥ अथ श्रीशरभसालुवपतिराजसः
 दत्रिंशत्तरमहामंत्रस्य वामदेवऋषिः बृहती छंदः ॥ षट्त्रिंशत्तरः श्रीशरभेश्वरो देवता ॥ वि
 बीजे ॥ स्वाहा शक्तिः फट् कीलकं मम षट्त्रिंशः ॥ विनियोगः ॥ त्रामित्यादि षडंगन्यासः ॥ ध्या
 ने ॥ सगस्त्रिंशरीरेण यत्ताभ्यां चंचुनादितः ॥ अथो वक्त्रं अतः पार ऊर्ध्वं वक्त्रं अतः भुजौ ॥ कालो
 नरदनो यमो नीलजो मृतनिखनः ॥ विष्णुस्तदंशो नादेव विनष्टबलविक्रमः ॥ १ ॥ छटा छटो यत्र याव
 पतिवितिष्ठ भूमतोः ॥ अष्टपादा यस्तदायनमः शरभमूर्तये ॥ २ ॥ चंद्राको वः ॥ इति ध्यात्वा मान
 सैः संपूज्य श्रुलादिमूलादिप्रदर्शयेत् ॥ मनुः ॥ ओं खै खै घं घं ऊं फट् शौं शौं शौं सर्वशान्तं संहारणा
 यशरभसालुवायपतिराजो यऊ फट् स्वाहा ॥ ३ ॥ ॥ ओं अथ श्रीअचोरशरभसालुवपतिराजमा
 लामंत्रस्य ॥ शिषानेऋषिः अतुष्ट्य छंदः ॥ श्रीशरभशालुवपतिराजवीरभद्रो देवता ॥ ह्रीं वीजं ह्रीं
 शक्तिः ॥ ह्रीं कीलकं ॥ मम सकललोपद्रवनिवारणार्थं ॥ अचोरशरभसालुवपतिराजवीरभद्र
 मालामंत्रं जपे विनियोगः ॥ हृदि ध्यायेत् कलमवर्णं नागाभरणभूषितं ॥ दंष्ट्राकरालवदनं द

शोर्देउमंडितो ॥ तस्य हारकसेकाशोजराशुक्रदणोभिते ॥ चितयेद्भुतवेतालेश्चदापस्मारशोत
 ये ॥ १ ॥ पंचोपचारपूजा ॥ अंग्रं ह्रीं अं नमो भगवते शारभसाल्वपतिराजाय प्रचोरशारभाय प्राका
 शागमनाय द्वात्रिंशद्भुत्नाय प्रचो ॥ प्रचोररुद्राय इमरुद्रस्त्राय नमिह गवतिर्धृताय समस्तदेवता
 विवाहसेविताय सर्वगणनाथाय भक्तजनरक्षका करेणाय वज्रपलवज्रे देहाय कृष्णसर्पय
 नोपवीताय द्वाह्रीं समस्तग्रहान् आकर्षय ॥ आवेशाय ॥ शिरः कं पय ॥ मर्दय ॥ भीषय
 २ रोदय रोद ॥ त्रिंशत्कोटिपिशाचाननवकोटिगंधर्वान् आकर्षय ॥ दशकोटिभद्रलीला
 न् आकर्षय ॥ नवकोटिदुर्गान् आकर्षय ॥ अष्टकोटिभैरवान् आकर्षय ॥ सप्तकोटिमा
 तृगणान् आकर्षय ॥ षट्कोटिभूतान् आकर्षय ॥ चतुर्कोटिब्रह्मराक्षसान् आकर्षय ॥ त्रिं
 शत्कोटिगणनाथान् आकर्षय ॥ द्विकोटिवीतालान् आकर्षय ॥ आवेशाय ॥ भीषय ॥ क्षो
 भय ॥ वेवं अं अं आकर्षय ॥ यं यं यं यं आवेशाय ॥ लं लं लं लं स्तं भय ॥ रं रं रं रं से हारय ॥ ओं न
 मो भगवते प्रचोरशारभाय शारभसाल्वपतिराजाय भस्मोह कितविप्रहाय सररुद्राक्षमाला

पंचकोटिपट्टी न आका कर्षय ८

स्थलपृष्ठानवेधय॥ वायुपृष्ठानवेधय॥ अग्निगृष्ठानवेधय॥ समस्तभूतन आकर्षय॥ सम
स्तमेताग्रहानआकर्षय॥ समस्तपिशाचग्रहानआकर्षय॥ स्तंभय॥ उच्चारय॥ कामिनोग्रहान
आकर्षय॥ सिद्धग्रहानआकर्षय॥ साध्यग्रहानआकर्षय॥ किञ्चापृष्ठानआकर्षय॥ व्याधिग्रहा
न आकर्षय॥ अस्यग्रहानआकर्षय॥ यत्तुष्टानआकर्षय॥ ममशत्रूनविधंसय॥ भिक्षु॥
शूलैर्नविदारय॥ ममशत्रूणांरक्तंणिव॥ समस्तभूतलोकानन्नापकाय॥ अखिलब्रह्मादना
यकाय॥ सर्वजनरत्नकाय॥ सहस्रदाक्षमालापराय॥ येद्याक्षरीमंत्रपरिमर्णाय॥ आदिशार
भेश्वराय॥ मोरुत॥ ममशत्रूनभत्त॥ ममकार्याणि साधय॥ ममसर्वग्रहानआकर्षय॥ ओ
ंओंओंओं॥ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं स्वाहा गौं वैं वैं वैं वैं वैं क्लैं सौं हुं फट्सर्वपापहरिणैः परममात्मवाय
यत्तराजाय हुं फटस्वारा॥ गौं नमः शिरसायै महाशारभे चतुष्कोणे पुजयेत्॥ इति शारभमालास
प्तमः ॥ ॥ ॥ सुरंगौरामादी तितैन लिखिते ॥ ॥ ॥ अथ शारभरिभटं॥ वैं वैं गौं नमो भगव
ते वीरशारभाय साल्वा पतिराजाय दत्ता धरंधं सनाय दत्तशिखेटनाय श्रीं ह्रीं ज्ञीं भद्रकाली
उगीं समेताय॥ गौं नमो भगवते रुद्राय प्राच्यादिशि इंद्रो देवता मोरुत्तरत्तं फटस्वारा॥ वैं वैं रु

ॐ आग्नेयादिर्हि अग्निदेता बंधय तु मां रक्षतु कटु स्वाहा खं खं ० रुद्राय १

शर्ये ॥ हे याम्यादिशायमोदेवता मोरक्ष ॥ स्वाहा ॥ खं खं रुद्राय ॥ येनै न स्यादिशानि कर्त्तुं देवता
बंधयतु ॥ स्वाहा ॥ खं खं ॥ रुद्राय वं वरुणादिशिवरुणादेवता बंधयतु ॥ स्वाहा ॥ खं खं ॥ रुद्राय
ययं वायव्यादिशिवो देवता बंधयतु ॥ स्वाहा ॥ खं खं ॥ रुद्राय ॥ सोमो वैर्यादिशिवो देवता
बंधयतु ॥ स्वाहा ॥ खं खं ॥ रुद्राय ॥ पांशुपात्यादिशिवो देवता बंधयतु ॥ स्वाहा ॥ खं खं ॥ रुद्राय
रुध्रायादिशिवो देवता बंधयतु ॥ स्वाहा ॥ खं खं ॥ रुद्राय ॥ अहस्यादिशिवो देवता बंधयतु ॥
त् ॥ स्वाहा ॥ खं खं ॥ रुद्राय ॥ ज्योतिषां तारस्यादिशिवो देवता बंधयतु ॥ स्वाहा ॥ खं खं ॥ रुद्राय
ज्योतिषां मां मां मायुधं मयि रिवारं रत्नं फट् स्वाहा ॥ रति **शरभदिभं नं** ॥ ॥ ॥ ॥
ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ येन मो भगवते विश्वशरीराय येन मुखं मे जनाय प्रणतार्तिविना
शनाय ॥ उग्राय उग्रदेष्टाय ॥ उग्रमणिभूषणाय ॥ उग्रकोलाहलाय ॥ सकलभूतनिवार
णाय ॥ करधृतकपालमालालंकृतभूषणाय ॥ पादौलवर्णवसनयशशभसाकुवाय सूर्य
सोमार्तिनलोचनाय उर्निवारणाय दुर्वादित्यप्रणामलाय इति रुद्राय ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं स
र्वभूतानां कर्षया कर्षय ॥ स्वाहा ॥ ज्योतिषां तारस्यादिशिवो देवता बंधयतु ॥ स्वाहा ॥ खं खं ॥ रुद्राय

कौमार ग्रह पाताल ग्रह २

ग्रह वेताल ग्रह अयस्मार ग्रह विचार ग्रह भूचर ग्रह कृष्ण ग्रह जल ग्रह ज्वाला मुख ग्रह स्त्री
ग्रह धर्म ग्रह पाप ग्रह पाप विक्रम ग्रह बाल ग्रह चातुर्थिक ग्रह निमित्त ग्रह निमिनाभि चार
ग्रह भव पिवा ग्रह यग्रह विचार ग्रह निपाचर ग्रह अहोरात्र ग्रह समग्र ग्रह पक्ष ग्रह मास
ग्रह मंडल ग्रह षण्मास ग्रह वत्सर ग्रह अनुक्षेप ग्रह अभिचार ग्रह पाप ग्रह वात ग्रह दानव
ग्रह ज्वर ग्रह रोग ग्रह चेतन ग्रह अचेतन ग्रह स्फोटक ग्रह दशात ग्रह वांति ग्रह भ्राति ग्रह मे
कार ग्रह धिक्कार ग्रह साध्यात ग्रह सत्रियात ग्रह शोषण ग्रह धीषण ग्रह आदिस ग्रह विना
यक ग्रह तांत्रिक ग्रह वैदिक ग्रह रागाग्रह राजग्रह किष्किट ग्रह हूट ग्रह सान्तिक ग्रह सर्वसा
त्तिक ग्रह नावेश यावेश यस्मै जय ॥ १ ॥ कं पय ॥ सकल पौलान ज्वालय ॥ सकलयदवी भ्रंश
य ॥ सकलाणीनीनयातय ॥ सकल सागरान्नोभय ॥ सकल नदीः शोषय ॥ सकल
रिष्टवज्रयजय मर्य ॥ सकल सेनाद्यं सय ॥ श्री द्वीक्षी कुं मोहय ॥ आसय ॥ भाषय
सकल भूतग्रहान् भाषय ॥ सर्वपिपाचग्रहान् भाषय ॥ सर्वसात्तिकग्रहान् भाषय ॥

